ओंतत्सत्

श्रीनानकविनय।

अर्थात्

श्रीगुरुग्रन्थ जी से उद्धृत गुरु तेगबहादुर विरचित ज्ञानवैराग्यभक्तिरसमय भजनों का संग्रह।

हिन्दी भाषा के प्रेमी तथा रसिकजनों के मनोविलास के लिये क्षत्रिय-पत्रिका सम्पादक श्री म० कु० बा० रामदीन सिंह द्वारा संगृहीत।
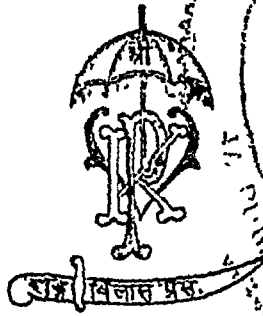
"खड्गविलास" प्रेस बांकीपुर.

साहिबप्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया।

१८९३.

प्रथम बार १०००

श्री गणेशायनमः।

ॐ सतिगुरु प्रसादि।

श्री नानकविनय।

राग गऊडी महला ९।

साधो मन का मान तिआगउ। काम क्रोध संगति दुरजन की तातें अहि निसि भागउ॥१॥ रहाउ॥ सुख दुख दोनों सम कर जानै अउर मान अपमाना॥ हरष सोग ते रहै अतीता तिन जग तत्व पछाना॥२॥ उसतति निंदा दोउ तिआगै खोजै पद निरबाना। जन नानक इह खेल कठिन है किनहू गुर मुखजाना॥३॥१॥

साधो रचना राम बनाई॥ इक बिनसै इक असथिर मानै अचरजु लखिओ न जाई॥१॥ रहाउ॥ काम क्रोध मोह बस प्रानी हरमूरति बिसराई। झूठा तन साँचा कर मानिउ जिउ सुपना रैनाई॥२॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की

छाँडू। जन नानक जग जानिओ मिथ्या रहिओ राम सरनाई ॥३॥२॥

प्रानी कउ हरि जस मन नहीं आवै। अहि निसि मगन रहै माआ मै कहु कैसे गुनगावै ॥१॥ रहाउ॥ पूत मीत माआ मम-ता सिउ इह बिधि आप बंधावै। मृग त्रिसना जिउ झूठो इह जग देखतासि उठ धावै ॥२॥ भुगत मुकति का कारन सुआमी मूढ ताहि बिसरावै। जन नानक कोटन मै कोउ भजन राम को पावै॥३॥३॥

साधो इह मन गहिओ न जाई। चंच-ल त्रिसना संग बसतु है याते थिर न रहाई ॥१॥ रहाउ॥ कठिन क्रोध घटही के भीतरि जिह सुध सब बिसराई ॥ रतन ग्यान सभ को हरलीना तासिउ कछु न बसाई ॥२॥ जोगी जतन करत सभ हारे गुनी रहे गुनगाई। जन नानक हर भए दयाला तउ सभ बिधि बनिआई॥३॥४॥

साधो गोविंद के गुन गावो। मानस जनम अमोलक पाओ बिरथा काहि गँवावो ॥१॥ रहाऊ॥ पतित पुनीत दीन-बंधु हरि सरनि ताहितुम आवो। गज को त्रास मिट्यो जिह सिमिरत तुम काहे बिसरावो ॥ २ ॥ तजि अभिमान मोह माया पुन भजन राम चित लावो। नानक कहत मुकत पंथ इहु गुर मुख होइ तुम पावो ॥३॥५॥

कोऊ माई भूलो मन समझावै। बेद पुरान साध मग सुनकर निमिष न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाऊ॥ दुरलभदेह पाइ मा-नस की बिरथा जनम सिरावै। माया मोह महा संकट बन तासिऊ रुच पावै ॥२॥ अंतर बाहर सदा संगि प्रभु तासिउ नेह न लावै। नानक मुकत ताहि तुम मानहु जिह घटि राम समावै ॥३॥६॥

साधो रामसरनि बिसरामा। बेदपुरान

पढै को इह गुन सिमरे हरि का नामा ॥१॥ रहाउ॥ लोभ मोह माइआ ममता फुन अउ बिषिअन की सेवा। हरष सोग परसै जिह नाहन सो मूरति है देवा ॥२॥ सुरग नरक अम्रित बिष ए सभ तिउ कंचन अर पैसा। उसतति निंदा ए सम जाकै लोभ मोह फुनि तैसा ॥३॥ दुख सुख ए बाधै जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी। नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिध को जो प्रानी ॥३॥७॥

मनरे कहा भयो तैं बउरा। अहि निसि अउध घटै नहीं जानै भइउ लोभ संग हउरा ॥१॥ रहाउ॥ जो तनु तै अपनो कर मानिओ अर सुंदर ग्रिह नारी। इन मै कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥२॥ रतन जनम अपनो तैं हार्‌यो गोबिंद गत नहीं जानी। निमष न लीन भयो चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरा-

नी॥३॥ कहु नानक सोई नर सुखिआ राम नाम गुनगावै। अउर सगल जगु माया मोहिआ निरभै पद नहीं पावै॥३॥८॥

नर अचेत पाप ते डररे॥ दीनदआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम पररे॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेदपुरान जास गुनगावत ताको नाम हीए मो धररे॥ पावन नाम जगत मै हरि को सिमरि सिमरि कस मल सभ हररे॥ २ ॥ मानस देह बहुर नहीं पावै कछू उपाउ मुकति का कररे॥ नानक कहत गाए करना मै भवसागर कै पार उतररे॥३॥९॥

ॐ सतिगुरप्रसादि। राग आसा महला ९।

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की॥ लोभग्रसिओ दसहूदिस धावत आसा लागिओ धन की॥१॥ ॥ रहाउ ॥ सुख कै हेति बहुत दुख पावत सेव करत जन जन की॥ दुआरहि दुआर स्वान जिउ

डोलत नहिं सुध रामभजन की ॥ २ ॥ मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हँसन की ॥ नानक हरि जस किउ नहीं गावत कुमति बिनासै तन की ॥३॥१०॥

ॐ सतिगुरुप्रसादि । राग देवगांधारी महला ९ ।

यह मन नैक न कह्यो करै । सीख सिखाए रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥ १ ॥ रहाउ । मदि माआ कै भयो बावरो हरिजस नहिँ उचरै । करि प्रपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदर भरै ॥२॥ सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कह्यो न कान धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम नित जाते काज सरै ॥३॥११॥

सब किछु जीवत को बिवहार । मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुन गृह की नारि ॥१॥ रहाउ॥ तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेत पुकार ॥ आध घरी

कोउ नहिं राखै घर ते देत निकार ॥२॥ म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ कहु नानक भज राम नाम नित जातें होत उधार ॥२॥१२॥

जगत मै झूठी देखी प्रीत ॥ अपने हीं सुख सिउ सभ लागे क्या दारा क्या मीत ॥ १ ॥ रहाउ। मेरउ मेरउ सभै कहत हित सिउ बाधिओ चीत ॥ अंतकाल संगी नहिं कोऊ इह अचरज है रीत ॥२॥ मन मूरख अजहू नहिँ समुझत सिख दै हारिओ नीत ॥ नानक भउजलपारि परै जउ गावै प्रभु के गीत ॥३॥१३॥

ॐ सतिगुरप्रसादि । राग बिहागडा महला ९ ।

हरि की गत नहि कोऊ जानै॥ जोगी जती तपी पचिहारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ॥ छिन्न महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करडारे ॥ रीते भरे भरे सखनावै यह ताको बिवहारे ॥२॥ अपनी माया आप पसारी आपहि देख-

नहारा ॥ नाना रूप धरे बहुरंगी सभ ते रहै निआरा ॥ ३ ॥ अगनत अपार अलख निरंजन जिह सब जग भरमायो ॥ सगल भरम तजि नानक प्रानी चरनि ताहि चित लायो ॥३॥१॥१४॥

ॐ सतिगुरप्रसादि । सोरठ महला ९ ।

रे मन राम सिउ कर प्रीत ॥ स्रवन गोबिंद गुन सुनउ अर गाउ रसना गीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर साध संगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ काल बियाल जिउ परिओ डोलै मुख पसारे मीत ॥२॥ आज काल फुनि तोहि ग्रसिहै समुझि राखउ चीत । कहै नानक राम भजिलै जात अउसर बीत ॥३॥ १५॥

मन की मनही माहि रही ॥ ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही ॥१॥ रहाउ॥ दारा मीत पूत रथ संपत धनपूरन सभमही ॥ अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजन राम को सही ॥ २ ॥ फिरत

फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ नानक कहित मिलन की बरीआ सिमरत कहा नहीं ॥ ३ ॥ १६ ॥

मनरे कउन कुमति तै लीनी ॥ पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहीं कीनी ॥१॥ रहाउ॥ मुकति पंथ जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ। अंत संग काहू नहीं दीना बिरथा आप बंधाआ ॥२॥ ना हरि भजिओ न गुरजन सेविओ नहि उपजिओ कछु गिआना ॥ घट ही माहि निरंजन तेरै तै खोजत उदिआना ॥ ३ ॥ बहुत जनम भरमत तै हारिओ असथिर मत नहीं पाई। मानस देह पाइ पद हरि भज नानक बात बताई ॥ ४ ॥ १७ ॥

मनरे प्रभु की सरनि बिचारो। जिह सिमरित गनिका सी ऊधरी ताको जस उर धारो॥१॥ रहाउ ॥ अटल भइओ ध्रूअ

जाकै सिमरनि अर निरभै पद पाआ । दुख हरता इह बिध को सुआमी तै काहे बिसराआ ॥२॥ जबही सरनि गही किरपानिधि गज ग्राह ते छूटा । महिमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥३॥ अजामिल पापी जगु जाने निमष माहि निसतारा । नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥४॥ १८॥

प्रानी कउन उपाउ करै । जाते भगति राम की पावै जम को त्रास हरै ॥१॥ रहाउ ॥ कऊन करम बिदिआ कहु कैसी धर्म कऊन फुनि करई । कऊन नाम गुर जाकै सिमरै भवसागर कउ तरई ॥ २ ॥ कलि मै एक नाम किरपानिधि जाहि जपै गति पावै ॥ अवर धर्म ताकै सम नाहनि इह बिध बेद बतावै ॥३॥ सुख दुख रहत सदा निरलेपी जाको कहत

गुसाँई ॥ सो तुमही महि बसै निरंतर नानक दर्पनि निआई॥ ४ ॥ १९॥

माई मैं किहिबिध लखऊ गुसाँई । महा मोह अगियान तिमिरि मो मो मन रह्यो उरझाई ॥१॥ रहाऊ ॥ सगल जनम भरमही भरम खोयो नहिं असथिर मति पाई ॥ बिखिआसकत रहिओ निसबासुर नहिं छूटी अधमाई ॥२॥ साध संग कबहू नहीं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई । जन नानक मै नाहि कोऊ गुन राख लेहु सरनाई ॥ २ ॥ २० ॥

माई मन मेरो बस नाहि ॥ निसबासुर बिखिअन कऊ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाऊ ॥ बेदपुरान सिम्रति के मत सुनि निमख न हिए बसावै । परधन परदारा सिउ रचिओ बिरथा जनम सिरावै ॥२॥ मदि माआ कै भओ बावरो सूझत नहिं कछु गिआना ॥ घटही भीतर

बसतु निरंजन ताको मरमु न जाना ॥ ॥३॥ जबही सरनि साध की आयो दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेतियो चिंतामनि काटी जम की फांसी ॥४॥२१॥

रे नर इह साँची जीअ धार ॥ सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥ बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नहीं दिनचार ॥ तैसेही इह सुख माया के उरझियो कहा गंवार ॥२॥ अजहू समझि कछु बिगरयो नाहिनि भजिले नाम मुरारि ॥ कहु नानक निज मतसाधन कउ भाखियो तोहि पुकारि ॥ २ ॥ २२ ॥

इह जगि मीतु न देखियो कोई ॥ सगल जगतु अपनै सुख लागियो दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥ दारा मित पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे । जबही निरधन देखियो नरकउ संगु

छाडि सभ भागे ॥ २ ॥ कहउ कहा या मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगायो । दीनानाथ सकल भै भंजन जसु ताको बिसरायो ॥३॥ सुआन पूछ जिउ भओ न सूधउ बहुत जतन मै कीनउ ॥ नानक लाज बिरद की राखहु नाम तुहारउ लीनउ ॥४॥ ॥२३॥

मनरे गह्यो न गुरु उपदेस । कहा भयो जउ मूड मुडाओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥ सांच छाडि कै झूठहि लागिओ जनम अकारथ खोओ । कर परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोओ ॥२॥ राम भजन की गति नही जानी माआ हाथि बिकाना । उरझि रह्यो बिखिअन सँगि बउरा नाम रतन बिसराना ॥३॥ रह्यो अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरद पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥२४॥

जो नर दुख मै सुख नहीं मानै। सुख सनेहु अरभै नहीं जाकै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ॥ नहि निंदिआ नहिं उसतति जाकै लोभ मोह अभिमाना। हरष सोग ते रहै निआरउ नाहिं मान अपमाना ॥२॥ आसा मनसा सगल तिआगै जगते रहै निरासा। काम क्रोध जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रह्म निवासा॥ ॥३॥ गुरु किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भओ गोबिंद सिउ जिउ पानी सँगि पानी॥ ३ ॥ २५॥

प्रीतम जानि लेहु मन माही। अपने सुख सिउ ही जग फांदिओ को काहू को नाहीं ॥१॥ रहाउ॥ सुख मै आन बहुत मिलि बैठत रहत चहूंदिसि घेरे। बिपति परी सभही संगु छाडित कोउ न आवत नेरै ॥२॥ घर की नारि बहुत हित

जासिउ सदा रहत संग लागी ॥जबही हंस तजी इह काआ प्रेत प्रेत कर भागी ॥ ३ ॥ इहि बिधि को बिउहार बन्यो है जा सिउ नेहु लगाओ ॥ अंत बार नानक बिन हरि जो कोउ काम न आओ ॥ ४ ॥ २६ ॥

ॐ सति गुरु प्रसादि धनासरी महला ९ ।

काहे रे बन खोजन जाई । सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ पुहुप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ तैसे ही हरि बसे निरंतर घट ही खोजहु भाई ॥२॥ बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुरु गिआन बताई ॥ जन नानक बिन आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ ॥ २७ ॥

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥ राम नाम का सिमरनु छोडिआ माआ हाथ बिकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता पिता भाई

सुत बनिता ताकै रस लपटाना ॥ जोबन धन प्रभुता कै मद मै अहि निसि रहै दिवाना ॥ २ ॥ दीनदयाल सदा दुख भंजन तासिउ मन न लगाना ॥ जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुख होइ पछाना ॥२॥ २८ ॥

तिह जोगी कउ जुगति जानउ ॥ लोभ मोह माआ ममता फुनि जिह घट माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥ पर निन्दा उसतति नहि जाकै कंचन लोह समानो ॥ हरष सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥२॥ चंचल मनुआ दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक इह बिधि को जो नर मुकति ताहि तुम मानो ॥ २९ ॥

अब मै कउन उपाउ करउ ॥ जिह बिधि मन को संसा चूकै भवनिधि पारि परउ ॥१ ॥ रहाउ ॥ जनम पाइ कछु भलो

न कीनो ताते अधिक डरऊ ॥ मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरऊ ॥२॥ गुर मति सुनि कछु गिआन न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरऊ । कहु नानक प्रभु बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरऊ ॥ ३ ॥ ३० ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि । जैतसरी महला ९ ।

भूल्यो मन माइआ उरझाओ ॥ जो जो करम किओ लालच लगि तिह तिह आप बँधाओ॥१॥ रहाउ ॥समझ न परी बिखै रस रचिओ जस हरि को बिसराओ ॥ संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बन खोजन कउ धाओ ॥ २ ॥ रतन राम घटही के भीतरि ताको गिआन न पाओ ॥ जन नानक भगवंत भजन बिन बिरथा जनम गंवाओ ॥ ३ ॥ ३१ ॥

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ जम को त्रास भयो उर अंतर सरन गही किरपानिधि तेरी ॥ १ ॥रहाउ॥ महा

पतित मुगध लोभी फुन करत पाप अबहारा ॥ भै मरबे को बिसरत नाहनि तिह चिंता तन जारा ॥ २ ॥ किए ऊपाऊ मुकति के कारन दह दिसि कउ उठि धाआ । घटही भीतरि बसै निरंजन ताको मरम न पाआ ॥ ३ ॥ नाहनि गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउन कर्म अब कीजै । नानक हारि पर्यौ सरनागति अभै दानु प्रभु दीजै ॥४॥२२॥

मनरे साँचा गहो बिचारा । राम नाम बिन मिथिआ मानो सगरो इह संसारा॥१॥ रहाउ ॥ जाकउ जोगी खोजत हारे पाओ नाहि तिह पारा ॥ सो स्वामी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥२॥ पावन नाम जगत मै हरि को कबहू नाहि सँभारा । नानक सरनि पर्यो जगबन्दन राखहु बिरद तुहारा ॥ ३ ॥ २३ ॥

ॐ सतिगुरु प्रसादि । टोडीमहला ९ ।

कहऊँ कहा अपनी अधमाई । उर-

झिओ कनक कामनी के रस नहिं कीरति प्रभुगाई ॥१॥ रहाउ ॥ जग झूठै कउ साँचु जानि कै तासिउ रुच उपजाई ॥ दीन-बंधु सिमरिओ नहीं कबहू होत जु संग सहाई ॥ २ ॥ मगन रहिओ माया मै निस दिन छुटी न मन की काई ॥ कहि नानक अब नाहि अनत गत बिन हर की सरनाई ॥ ३ ॥ ॥ ३४ ॥

ॐसतिगुरप्रसादि । तिलंगमहला ९ ॥ काफी १ ॥

चेतना है तउ चेतलै निसि दिन मैं प्रानी । छिनछिन अउध बिहात है फूटै घट जिउ पानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना । झूठै लालचि लग कै नहि मरन पछाना ॥ १ ॥ अजहू कछु बिगर्यो नहीं जो प्रभु गुन गावै । कहु नानक तिह भजन ते निरभै पद पावै ॥ २ ॥ ३५ ॥

जागलेहु रे मना जाग लेहु कहा

गाफल सोया ॥ जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संग न होया ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता पीता सुत बंधु जनहित जा सिउ कीना ॥ जीउ छुटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥ २ ॥ जीवत लउ बिउहार है जग कउ तुम जानउ । नानक हरि गुन गाइलै सभ सुफन समानउ ॥ २ ॥ ३६ ॥

हरि जसु रे मना गाइलै जो संगी है तेरो । अउसर बीतिओ जात है कहिओ मानले मेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संपति रथ धन राजसिउ अति नेहु लगायो । काल फाँस जब गल परी सभ भयो परायो ॥२॥ जानबूझ कै बावरे तै काज बिगार्यो । पाप करत सुकचिओ नहीं नह गरब निवार्यो ॥ ३ ॥ जिह बिधि गुरु उपदेसिआ सो सुनु रे भाई । नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभु सरनाई ॥४॥ ३७ ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बिलावलु महला ९ ॥ दुपदे १ ॥

दुखहरता हरिनाम पछानो ॥ अजामिलु गनिका जिह सिमरत मुकति भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥ गज की त्रास मिटी छिन हू महि जबही राम बखानो। नारद कहत सुनत ध्रूअ बारक भजन माहि लपटानो ॥२॥ अटल अमर निरभै पदु पायो जगत जाहि हैरानो । नानक कहत भगतरछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥ ३ ॥ ३८ ॥

हरि के नाम बिना दुख पावै ॥ भगति बिना सहिसा नहिं चूकै गुरु इह भेदु बतावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहा भयो तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नहीं आवै। जोग जग निहफल तिन मानहु जो प्रभु जस बिसरावै॥२॥मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिन्द के गुन गावै ॥ कहु नानक इहि बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै॥३९॥

जामै भजनु राम को नाहीं । तिह नर जनम अकारथ खोया यह राखहु मनमाही ॥ १ ॥ रहाऊ ॥ तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नहिं मनूआ बसि जाको । निहफल धर्म ताहि तुम मानो साँच कहत मै याको ॥२॥ जैसे पाहनि जल महि राखिओ भेदै ना तिह पानी ॥ तैसेही तुम ताहि पछानो भगति हीन जो प्रानी ॥ ३ ॥ कलि मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेद बतावै । कहु नानक सोई नर गुरूआ जो प्रभु के गुन गावै ॥ ३ ॥ ४० ॥

ॐ सति गुरुप्रसादि । राग रामकली महला ९ तिपदे ।

रे मन ओट लेउ हरिनामा ॥ जाकै सिमरन दुरमति नासै पावहु पद निरबाना ॥१॥ रहाऊ ॥ बडभागी तिह जन कउ जानउ जो हरि के गुन गावै । जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठ सिधावै ॥२॥

अजामिल कउ अंत काल मै नारा-इन सुधि आई। जागति कउ जोगी सुर बांछत सो गति छिन महिपाई ॥३॥ नाहिन गुन नाहनि कछु बिद्या धरम कउन गज कीना ॥ नानक बिरद राम का देखी अभै दानु तिहि दीना ॥४॥४१॥

साधो कउन जुगति अब कीजै। जाते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मन भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ मन माइआ मै उरझि रहिओ है बूझै नहिं कछु गिआना ॥ कउन नाम जग जाकै सिमरै पावै पद निरबाना ॥२॥ भए दयाल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई। सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभु कीरति गाई ॥३॥ राम नाम नर निसु बासर मै निमख एक उरधारै। जम को त्रास मिटै नानक तिहि अपनो जनम सवारै ॥४॥४२॥

प्रानी नारायन सुधि लेह। छिन

छिन अउध घटै निसीबासर ब्रिथा जात है देह ॥१॥ रहाउ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोयो बालापन अगिआना । बिरध भयो अजहू नहिं समझै कउन कुमति उरझाना ॥ २॥ मानस जनम दीओ जिह ठाकुर सो तै किउँ बिसरा-यो । मुकति होत नर जाकै सिमरै निमख न ताको गायो ॥ ३॥ माया को मद कहा करत है संगि न काहू जाई । नानक कहत चेति चिंता मनि होइहैं अंति सहाई ॥४॥ ४३

ॐ सतिगुरु प्रसादि । मारू महला ९ ।

हरि को नाम सदा सुखदाई ॥ जा कउ सिमरि अजामिल उधर्यो गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ पंचाली कउ राजसभा मै रामनाम सुधिआई । ताको दूख हर्यौ करुना मै, अपनी पैज बढाई ॥२॥ जिह नर जस किरपानिधि

गायो ताकउ भयो सहाई। कहु नानक मै इहि भरोसै गही आस सरनाई ॥ ३ ॥ ४४ ॥

अब मै कहा करउ री माई। सगल जनम बिखिअन सिउ खोआ सिमरो नाहि कन्हाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काल फाँस जब गर मै मेली तिह सुधि सभ बिसराई। राम नाम बिन या संकट मैं को अब होत सहाई ॥२॥ जो संपत अपनी कर मानी छिन मो भई पराई। कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहूँ न गाई ॥३॥४५॥

माई मै मन को मान न त्याग्यो ॥ माया के मदि जनम सिरायो राम भजन नहि लाग्यो ॥१॥ रहाउ ॥ जम को डंड पर्‍यो सिर ऊपर तब सोवत तै जाग्यो। कहा होत अब को पछुताए छूटत नाहनि भाग्यो ॥२॥ इह चिंता

उपजी घट मै जब गुरु चरनन अनुरा-
ग्यो । सुफल जनम नानक तब हूआ
जो प्रभु जस मै पाग्यो ॥३॥ ४६ ॥

ੴ सतिगुरप्रसादि । राग बसंत हिंडोल । महला ९ ।

साधो इह तन मिथिआ जानउ॥ या
भीतरि जो राम बसत है साँचो ताहि
पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु है संपति
सुपने की देखि कहा ऐडानो। संगति हारै
कछू न चालै ताहि कहाँ लपटानो ॥२॥
उसतति निंदा दोऊ परहरु हरि कीर-
ति उर आनो । जन नानक सभही मै
पूरन एक पुरख भगवानो ॥३॥४७॥

पापी हीऐ मैं कामु बसाइ ॥ मन
चंचल याते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥
जोगी जंगम अरु संनिआस । सभही
परि डारी इह फाँस ॥२॥ जिहि जिहि हरि
को नाम सम्भारि । ते भवसागर उतरे

पार ॥३॥ जन नानक हरि की सरनाई ॥
दीजै नाम रहै गुन गाई ॥४॥ ४८॥

माई मै धन पाइओ हरि नाम ॥ मन
मेरो धावन ते छुट्यो करि बैठो बिस-
रामु ॥१॥ रहाउ ॥ माया ममता तन ते
भागी उपज्यो निरमल ग्यानु । लोभ
मोह इह परसि न साकै गही भगति
भगवान ॥१॥ जनम जनम का संसा चूका
रतन राम जब पाइआ । त्रिसना सकल
बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ॥२॥
जा कउ होत दइआल किरपानिधि सो
गोविंद गुन गावै । कहु नानक इह बिधि
को संपै कोऊ गुरमुख पावै ॥४ ॥५०॥

मन कहा बिसारिओ राम नाम । तन
बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ इहु
जग धूँए का पहार । तै साँचा मानिआ
किहि बिचारि ॥२॥ धन दारा संपति
ग्रेह । कछु संगि न चालै समझ लेह ॥३॥

इक भगति नाराइन होइ संगि । कहु नानक भजतिह एकरंग ॥४ ॥५१॥

कहा भूल्यो रे झूठो लोभ लाग ॥ कछु बिगरिओ नाहनि अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥ सम सुपनेकै इहु जगु जान । बिनसै छिन मै साँची मान ॥२॥ संगि तेरै हरि बसत नीत । निसबासुर भजताहि मीत ॥३॥ बार अंत की होइ सहाइ । कहु नानक गुन ताके गाइ ॥४॥ ५२ ॥

ॐ सतिगुरु प्रसादि । राग सारंग महला ९ ।

हरि बिन तेरो कौन सहाई ॥ का की मात पिता सुत बनिता को काहू का भाई ॥१॥ रहाउ ॥धन धरनी अरु संपति सगरी जो मान्यो अपनाई । तन छूटै कछु संगिन चालै कहाँ तहाँ लपटाई ॥२॥ दीनदयाल सदा दुख भंजन तासिउ रुच न बढाई । नानक कहत जगत सब मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥ ३॥५३॥

कहा मन बिषिआ सिउ लपटाही॥ या जग मै कोऊ रहन न पावै इक आवहिं इक जाही ॥१॥ रहाउ ॥ काको तनु धनु संपति काकी कासिउ नेहु लगाहीं। जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाहीं ॥२॥ तजि अभिमानि सरनि संतन गहु मुकति होत छिन माहीं। जन नानक भगवंत भजन बिन सुख सुपने भी नाहीं ॥३॥५४॥

कहा नर अपनो जनम गँवावै। माया मद बिखआ रस रचिओ राम सरनि नहीं आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसार सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै। जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोउ पावै ॥२॥ मिथिआ तनु साँचा करि मान्यो इह बिधि आपु बंधावै। जन नानक सोऊ जग मुकता राम भजन चित लावै ॥३॥५५

मन कर कबहूँ न हरि गुन गायो।

बिखिआसकत रह्यो निसुबासुर कीनो अपनो भायो ॥१॥ रहाउ । गुरु उपदेस सुन्यो नहि कानिन पर दारा लपटायो । पर निंदा कारन बहु धावत समझ्यो नहीं समझायो ॥ २ ॥ कहा कहउ मै अपनी करनी जिह बिधि जनम गँवायो । कहि नानक सभ अउगुन मो मैं राखि लेहु सरनायो ॥ ३॥५६॥

ੴ सति नाम करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरुप्रसादि ।

राग जैजांवती महला ९ ।

राम सिमर राम सिमर इहै तेरे काज है । माया को संग तिआग प्रभ जू की सरनि लाग । जगत सुखमान मिथिआ झूठो सभ साज है॥१॥ रहाउ । सुपने जिउ धन पछानु । काहे पर करत मानु । बारू की भीत जैसे बसुधा को राज है ॥ २ ॥ नानक जन कहत बात बिनसि जैहै

तेरो गात । छिनछिन करि गयो काल तैसे जात आजु है ॥२॥५७॥

राम भजु राम भजु जनम सिरात है। कहउ कहा बार बार समझत नहिं किउ गँवार बिनसत नहिं लगै बार ओरे सम गात है ॥१॥ रहाउ। सगल भरम डारि देह। गोबिंद को नाम लेह। अंति बार संग तेरै इहैएक जात है ॥ २ ॥ बिखिआ बिख जिउँ बिसारि। प्रभ को जस हिए धारि। नानक जन कहि पुकारि अउसर बिहात है ॥२॥५८॥

रे मन कउन गति होइ है तेरी। इह जग मै राम नाम सो तउ नहीं सुनिओ कान। बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ ॥ मानस को जनम लीन सिमरनु नहिं नीमख कीना दारा सुख भयो दीन पगहु परी बेरी ॥२॥ नानक जन कहि पुकारि

सुपनै जिऊ जगु पसारि । सिमरत नहीं किऊँ मुरारि माआ जाकी चेरी ॥३॥५९॥
बीत जैहैं बित जैहै जनम अकाज रे । निस दिन सुनि कै पुरान । समझत न रे अजान । काल तउ पहुंच्यो आनी कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाऊ । असथिर जो मानियो देह, सो तउ तेरऊ होइ है खेह, किऊँ न हरि को नाम लेह मूरख निलाज रे ॥२॥ राम भगति हीए आनि छाडि देते मन को मान । नानक जन इह बखानं जगत मै बिराजु रे ॥३॥६०॥

ॐ सतिगुरुप्रसादि । श्लोक महला ॥

गुन गोबिंद गायो नहीं , जनम अकारथ कीन ।
कहु नानक हरि भज मना , जिह विध जल को मीन ॥ १ ॥
बिखियन सिऊ काहे रच्यो , निमख न होहि ऊदास ।
कहु नानक हरि भज मना , परै न जम की फास ॥ २ ॥
तरनापौ इहि विधि गयो , लियो जरा तन जीत ।
कहु नानक भज हरि मना , अऊध जात है वीत ॥ ३ ॥
बिराधि भयो सूझै नहीं , काल पहूंच्यौ आन ।
कहु नानक नर बावरे , क्यौं न भजै भगवान ॥ ४ ॥
धन दारा संपति सगल , जिन अपनी कर मान ।
इन मै कछु संगी नहीं , नानक सांची मान ॥ ५ ॥

पतित ऊधारन भै हरन , हरि अनाथ के नाथ ।
कहु नानक तिह जानिए , सदा वसत तुम साथ ॥ ६ ॥
तन धन जिह तोको दियो , ता सिऊ नेह न कीन ।
कहु नानक नर बावरे , अब क्यौं डोलत दीन ॥ ७ ॥
तन धनु संपै सुख दियो , अरु जिह नीके धाम ।
कहु नानक सुनरे मना , सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥
सभ सुख दाता राम है , दूसर नाहि न कोइ ।
कहु नानक सुनरे मना , तिह सिमरत गत होइ ॥ ९ ॥
जिह सिमरत गति पाइए , तिह भजरे तै मीत ।
कहु नानक सुनरे मना , अउध घटत है नीत ॥१०॥
पांच तत्त को तन रच्यो , जानहु चतुर सुजान ।
जिह ते उपज्यो नानका , लीन ताहि मै मान ॥११॥
घटि घटि मै हरि जू वसै , संतन कह्यो पुकार ।
कहु नानक तिह भजु मना , भऊनिध ऊतरहु पार ॥१२॥
सुख दुख जिह परसै नहीं , लोभ मोह अभिमान ।
कहु नानक सुन रे मना , सो मूरत भगवान ॥१३॥
ऊसतति निंद्या नाहिजिह , कंचन लोह समान ।
कहु नानक सुनरे मना , मुकति ताहि तै जान ॥१४॥
हरष सोग जाकै नहीं , वैरी मीत समान ।
कहु नानक सुन रे मना , मुकति ताहि तै जान ॥१५॥
भै काहू कऊ देद नहिं , नाहिं भै मानत आन ।
कहु नानक सुनरे मना , ज्ञानी ताहि वखान ॥१६॥
जिहि विखिआ सगली तजी, लियो भेख वैराग ।
कहु नानक सुन रे मना , तिह नर माथै भाग ॥१७॥
जिह माआ ममता तजी , सभ ते भयो उदास ।
कहु नानक सुन रे मना , तिह घट ब्रह्म निवास ॥१८॥
जिह प्रानी हऊ मै तजी , करता राम पछान ।
कहु नानक वहु मुकति नर , इह मन साँची मान ॥१९॥
भै नासन दुरमति हरन , कलि मै हरि को नाम ।
निसि दिनि जो नानक भजै, सफल होहि तिहि काम ॥२०॥

जिह्वा गुन गोविंद भजहु , करनु सुनहु हरि नामु ।
कहु नानक सुन रे मना , परहि न जम कै धाम ॥२१॥
जो प्रानी ममता तजै , लोभ मोह अहंकार ।
कहु नानक आपन तरै , अउर न लेत उधार ॥२२॥
जिउ सुपना अरु पेखना , ऐसे जग कऊ जान ।
इन मै कछु साँचो नहीं , नानक बिन भगवान ॥२३॥
निस दिन माया कारने , प्रानी डोलत नीत ।
कोटिन मै नानक कोऊ , नाराइन जिह चीत ॥२४॥
जैसे जल तें बुदबुदा , उपजै बिनसै नीत ।
जग रचना तैसे रची , कहु नानक सुन मीत ॥२५॥
प्रानी कछू न चेतई , मदि माया कै अंध ।
कहु नानक बिन हरिभजन , परत जाहि जमफंद ॥२६॥
जो सुख को चाहै सदा , सरन राम की लेहु ।
कहु नानक सुन रे मना , दुरलभ मानस देहु ॥२७॥
माया कारन धावही , मूरख लोग अजान ।
कहु नानक बिन हरिभजन , बिरथा जनम सिरान ॥२८॥
जो प्रानी निस दिन भजे , रूप राम तिह जान ।
हरिजन हरि अंतर नहीं , नानक सांची मान ॥२९॥
मन माया मैं फंध रह्यो , बिसर्‌यो गोविंद नाम ।
कहु नानक बिन हरिभजन , जीवन कौने काम ॥३०॥

सोरठा ।

नर चाहत कछु अऊर , अऊरे ते अऊरै भई ।
चितवत रहि उठ गऊर , नानक फांसी गल परी ॥३१॥
तीरथ ब्रत अरु दान करि , मन मैं धरै गुमान ।
नानक निहफलु जाति तिह , जिउ कुंजर इसनान ॥३२॥
मन माया मै फंध रह्यो , बिसर्‌यो गोविंद नाम ।
कहु नानक बिनु हरि भजन , जीवन कऊनै काम ॥३३॥
प्रानी रामु न चेतई , मंद माया कै अंध ।
कहु नानक हरि भजन बिनु , परत ताहि जम फंध ॥३४॥
सुख मैं बहु संगी भए , दुख मैं संगि न कोइ ।

कहु नानक हरि भजु मना , अंत सहाई होइ ॥३५॥
जनम जनम भरमति फिरिउ , मिट्यो न जम को त्रास ।
कहु नानक हरि भजु मना , निरभै पावै बास ॥३६॥
जतन बहुतु मै करि रहिउ , मिटिउ न मन को मान ।
दुरमति सिउ नानक फँधिउ , राखि लेहु भगवान ॥३७॥
बाल जुआनी अरु बिरध , फुनि तीन अवस्था जान ।
कहु नानक हरि भजन बिनु , बिरथा सभही मान ॥३८॥
करनो हुतो सो ना कियो , परिउ लोभ कै फंध ।
नानक समि उर मग यौ , अब किउं रोवत अंध ॥३९॥
मन माया मो रमिरहिउ , निकसत नाहि न मीत ।
नानक मूरत चित्र जिऊं , छाडत ताहि न भीति ॥४०॥
जतन बहुत सुख के किए , दुख को कियो न कोइ ।
कहु नानक सुन रे मना , हरि भावै सो होइ ॥४१॥
स्वामी को गृहु जिउ सदा , स्वान तजत नहिं नित ।
नानक इहु बिध हरि भजऊ , इक मनि होइ कै चित ॥४२॥
जगतु भिखारी फिरतु है , सभ को दाता रामु ।
कहु नानक मन सिमरि तिहि , पूरन होवै काम ॥४३॥
झूठो मानु कहा करै , जगु सुपने जिऊ जान ।
इन मै कछु तेरो नहीं , नानक कहिउ बखान ॥४४॥
गरबु करतु है देह को , बिनसै छिन मै मीत ।
जिह प्रानी हरि जसु कहिउ , नानक तिहि जगु जीतं ॥४५॥
जिहि घटि सिमरनि राम को , सो नरु मुकता जानु ।
तिहि नर हरि अंतर नहीं , नानक सांची मानु ॥४६॥
सिर कंपिउ पग डगमगे , नैन जोति ते हीन ।
कहि नानक इह गति भई , तऊ न हरि रस लीन ॥४७॥
निज करि देखिउ जगत मै , को काहू को नाहिं ।
नानक थिरु हरि भगत है , तिहि राखऊ मन माहिं ॥४८॥
जग रचना सभ झूठ है , जान लेहु रे मीत ।
कहि नानक थिर ना रहै , जिऊ बारू की भीति ॥४९॥
राम गयो रावन गयो , जाको बहु परिवारु ।

कहु नानक थिरु कछु नहीं , सुपने जिऊ संसार ॥५०॥
चिंता ताकी कीजिए , जो अनहोनी होय ।
इह मारगु संसार को , नानक थिरु नहिं कोइ ॥५१॥
जो उपजिउ सो बिनसिहै , परो काज को काल ।
नानक हरिगुन गाइ ले , छाडि सकल जंजाल ॥५२॥

दोहरा ।

बलि छूट्यो बंधन परे , रह्यो न कछू उपाइ ।
कहि नानक अब ओट हरि , गज ज्यों होइ सहाय ॥५३॥

महला १० ।

बलिहू यो बंधन छुटे , सभ कछु होत उपाय ।
सभ कछु तुमरे हाथ मै , तुमही होइ सहाय ॥५४॥
राम नाम उर मै गह्यो , जाके सम नहिं कोइ ।
जिहि सुमिरत्ति संकट मिटे , दरस तुहारो होइ ॥५५॥
बंधु सखा सभ तजि गए , कोउ न निबहो साथ ।
कहु नानक इह बिपति महिं , एक ओट रघुनाथ ॥५६॥
नाम रह्यो साधू रह्यो , रहियो गुरु गोविंद ।
कहु नानक इह जगत महि , किनै जप्यौ गुरु संत ॥५७॥

इति श्री नान्हकसाह कृत विनयपत्रिका संपूर्ण ।

श्री रामचरितमानस

अर्थात्

श्री तुलसी कृत रामायण ।

यह ग्रन्थ बड़े परिश्रम और यत्न से श्री तुलसीदास जी की लिखी हुई ख़ास प्रति से शोध कर ज्यों का त्यों छापा गया है । इस भय से कि कदाचित् कोई इसे असम्भव समझे, गोसाईं जी के हाथ की लिखी हुई प्रति के १० पृष्ठ का फोटोग्राफ़ भी पुस्तक में लगा दिया है, और उस की दृढ़ पुष्टि के लिए गोसाईं जी के हाथ के लिखे हुए पंचनामा का फोटोग्राफ भी उसी के संग है, जिस में लोगों को यह भी न कहना पड़े कि गोसाईं जी के हाथ के लिखे हुए का प्रमाण ही क्या है ? और लोगों की भांति मैं नहीं चाहता कि इश्तिहार में नीचे से ऊपर तक प्रशंसा ही भर दूं, क्योंकि जो इस के गुणग्राहक हैं उन के लिये इतना ही बहुत है । इस ग्रन्थ में तुलसीदास जी का जीवनचरित्र भी दिया गया है और अक्षर बड़ा वो कागज़ अच्छा है । तीन सौ वर्ष पर यह अलभ्य पदार्थ हाथ लगा है, जिन को रामरस का अपूर्व स्वाद लेना हो वे न चूकें और नीचे लिखे हुए पते से मंगा लेवैं । नहीं तो अवसर निकल जाने पर पछताना होगा ।

मूल्य फोटोग्राफ़ जिल्द सहित ७) मूल्य विना फोटो का ४) डाक महसूल ॥।) और ॥) आना

मिलने का पता—

साहिबप्रसाद सिंह

"खड्गविलास" प्रेस—बांकीपुर ।